Resource: मुख्य शब्द (Biblica)

Biblica Study Notes (Key Terms) © 2023 Biblica Inc. Released under CC BY-SA 4.0 license. Biblica Study Notes has been adapted in the following languages: Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文)from Biblica Study Notes © 2023 Biblica Inc. Released under CC BY-SA 4.0 license by Mission Mutual.

मुख्य शब्द (Biblica)

म

मंदिर

यरूशलेम की वह इमारत जहां लोग अप्रमेश्वर की आराधना करने जा सकते थे। इसे परमेश्वर का घर या यहोवा का घर भी कहा जाता था। पहला निर्माण तब हुआ जब सुलैमान राजा था। परमेश्वर वहाँ अपने लोगों के साथ उपस्थित था। बेबीलोनियों ने इसे 586 ईसा पूर्व में नष्ट कर दिया था। कई वर्षों के बाद, यहूदियों ने एक और निर्माण किया। वर्ष 70 ई. में रोमियों द्वारा उस मंदिर को नष्ट करने के बाद, यहूदियों ने कभी दूसरा मंदिर नहीं बनाया। यीशु ने मन्दिर को अपने पिता का घर कहा। यीशु ने कहा कि उसका शरीर नया मंदिर है। ऐसा इसलिए था क्योंकि परमेश्वर यीशु के माध्यम से अपने लोगों के साथ मौजूद थे। परमेश्वर उन लोगों के माध्यम से पृथ्वी पर मौजूद रहता है जो यीशु का अनुसरण करते हैं। वे पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं। इस वजह से विश्वासी इसे एक नए मंदिर के रूप में वर्णित करते हैं।

मकिदुनिया

एक रोमी क्षेत्र जो अब उत्तरी यूनान में है। (यूनान) पौलुस अपनी दूसरी यात्रा पर वहाँ गए थे। उन्होंने मकिदुनिया के कई शहरों में कलीसियाओं की स्थापना में मदद की।

मत्ती

मत्ती को नए नियम की पहली पुस्तक का लेखक माना जाता है। वह यीशु के 12 शिष्यों में से एक थे। उन्हें लेवी भी कहा जाता था और वे एक महसूल लेने वाला था।

मध्यस्थ

कोई व्यक्ति जो लोगों या समूहों को एक-दूसरे से बात करने और एक समझौते पर आने में मदद करता है। इसे मध्यस्थ भी कहा जाता है। मूसा ने यह काम इस्राएल के लोगों और परमेश्वर के बीच सिनै पर्वत पर किया। लोग परमेश्वर के करीब नहीं आ सकते थे। वे उससे डरते थे। परमेश्वर की पवित्रता के करीब होने से उन्हें नुकसान हो सकता था। इसलिए मूसा ने लोगों को बताया कि परमेश्वर उनसे क्या कहना चाहता है। फिर उसने परमेश्वर को बताया कि लोग परमेश्वर से क्या कहना चाहते हैं। इस तरह उसने उन्हे सिनै पर्वत की वाचा स्थापित करने में मदद की। बाद में, यीशु परमेश्वर और सभी मनुष्यों के बीच मध्यस्थ बन गए। क्योंकि मनुष्य पाप करते हैं, वे परमेश्वर के साथ शांति से नहीं रह सकते। यीशु पूरी तरह से मनुष्य और पूरी तरह से परमेश्वर हैं। यीशु ने क्रूस पर मरते समय पाप की समस्या का समाधान किया। इसलिए अब मनुष्यों को पाप के लिए क्षमा किया जा सकता है और वे परमेश्वर के साथ शांति से रह सकते हैं। इस तरह यीशु नई वाचा के मध्यस्थ हैं।

मनश्शे

यूसुफ और असेनाथ का सबसे बड़ा पुत्र। इब्रानी भाषा में मनश्शे का अर्थ है भुलाना। याकूब ने उसे अपने पुत्रों में से एक के रूप में गोद लिया। मनश्शे की वंशावली इस्राएल की एक जनजाति बन गई। जनजाति का आधा हिस्सा यरदान नदी के पूर्व में रहता था। अन्य आधे लोग कनान में यरदान नदी के पश्चिम में रहते थे।

मनुष्य

परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी समानता में बनाया। वह चाहता था कि वे उसके साथ पूरी शांति से हमेशा के लिए रहें। उन्हें एक दूसरे के साथ और शेष सृष्टि के साथ शांति से रहना था। लेकिन आदम और हव्वा ने पाप किया। तब से पाप और मृत्यु का मनुष्य के ऊपर नियंत्रण हो गया। मनुष्य पाप करते हैं। मनुष्य मरते हैं।

मनुष्य का पुत्र

किसी व्यक्ति या मानव के बारे में बात करने का एक तरीका। यह दानिय्येल के एक दर्शन में किसी का नाम भी है (दानिय्येल 7:13–14)। दर्शन में, मनुष्य के पुत्र ने इस्राएल को उनके शत्रुओं से बचाया। यीशु ने स्वयं को मनुष्य का पुत्र कहा। यह इस बारे में बात करने का एक तरीका था कि वह मानव हैं और उनके पास परमेश्वर का अधिकार है। यीशु ने समझाया कि

मनुष्य के पुत्र के रूप में वह कष्ट सहेंगे। फिर वह परमेश्वर के शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। वे शत्रु पाप, मृत्यु और बुराई हैं। यीशु यह सब सभी मनुष्यों के लिए करेंगे।

मन्ना

निर्गमन के बाद रेगिस्तान में इस्राएलियों के लिए परमेश्वर ने जो स्वर्ग से रोटी प्रदान की। परमेश्वर ने इसे सप्ताह में छह दिन उनके लिए भेजा। यह वह भोजन था जिसे इस्राएलियों ने तब तक खाया जब तक वे कनान में प्रवेश नहीं कर गए। मन्ना से भरा एक घड़ा वाचा के सन्दूक में रखा गया था। यह लोगों के लिए एक अनुस्मारक था कि परमेश्वर ने उनके लिए किस प्रकार प्रावधान किया था।

मपीबोशेत

योनातान का पुत्र और शाऊल का पोता। वह बिन्यामीन के गोत्र से था। उसके पैर उस दिन एक दुर्घटना में घायल हो गए थे जब योनातान की मृत्यु हुई थी। जब दाऊद राजा बना, तो उसने हमेशा मपीबोशेत के साथ अच्छा व्यवहार किया।

मरकुस

मरकुस के सुसमाचार के लेखक। उन्हें यूहन्ना मरकुस भी कहा जाता था। उनकी माँ का घर यरूशलेम में मसिहियों के लिए प्रार्थना का स्थान था। वह पतरस का शिष्य था और बरनबास उसका चचेरा भाई था। मरकुस ने पौलुस और बरनबास के साथ उनकी पहली यात्रा की लेकिन यात्रा छोड़ दी और जल्दी चले गए। बाद में वह फिर से पौलुस के काम में मददगार हुआ।

मरियम

अम्राम और योकेबेद की बेटी, जो लेवी के गोत्र से थीं। मूसा और हारून उसके भाई थे। उसने मूसा को इस्राएल के लोगों को निर्गमन के दौरान नेतृत्व करने में मदद की। वह एक भविष्य बताने वाली थी।

मरियम मगदलीनी

एक महिला जो यीशु की एक वफादार अनुयायी थी। ऐसा माना जाता है कि वह गलील के मगदला शहर से थी। यीशु ने जिसमें से सात दुष्ट-आत्माओ को बाहर निकाला था।

मरियम, मार्था और लाज़र

यीशु के करीबी दोस्त दो बहनें और एक भाई। वे यरूशलेम के बाहर बैतनिय्याह में रहते थे। यीशु उनके घर ठहरते थे। लाज़र को चार दिन तक दफनाने के बाद, यीशु ने उसे फिर से जीवित किया। मरियम ने अपने गहरे प्रेम को प्रकट करने के लिए यीशु के सिर पर महंगा इत्र डाला।

मरीबा

इब्रानी भाषा में, शब्द मरीबा का अर्थ है बहस करना। बाइबिल में दो स्थानों का नाम मरीबा है। दोनों स्थानों पर इस्राएलियों ने पानी न होने के कारण परमेश्वर और मूसा से बहस की। एक स्थान का नाम मस्सा और मरीबा था। दूसरा स्थान मरीबा कादेश कहलाता था और कादेशबर्ने के पास था।

मलाकी

बेबीलोन में रहने के लिए मजबूर होने के बाद यहूदियों के यरूशलेम लौटने के बाद एक भविष्यवक्ता। उनकी भविष्यवाणियाँ मलाकी की पुस्तक में दर्ज हैं।

मलिकिसिदक

परमेश्वर का एक याजक जो शालेम का राजा था। शालेम अब्राहम के समय में यरूशलेम का नाम था। मलिकिसिदक ने अब्राहम को आशीष दिया जब अब्राहम ने लूत को बचाया। अब्राहम ने उसे युद्ध में जीती हुई हर चीज का दसवां हिस्सा देकर सम्मानित किया।

मसीह

यूनानी भाषा में मसीहा या अभिषिक्त के लिए शब्द। जब यीशु पृथ्वी पर रहते थे, तो कई यहूदी यह मानने लगे कि वह मसीहा हैं। इसलिए यीशु को मसीह कहा जाता है। (मसीहा, यीशु)

मसीह का रहस्य

इस बारे में सच्चाई कि कैसे परमेश्वर यीशु मसीह के माध्यम से दुनिया के लिए अपनी योजना को पूरा करते हैं। नए नियम में, रहस्य आम तौर पर कुछ ऐसा होता है जिसके बारे में लोगों को नहीं बताया गया है। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने कहा था कि परमेश्वर अपने लोगों को बचाएगा। लेकिन यहूदियों को ठीक-ठीक पता नहीं था कि परमेश्वर यह कैसे और कब करेगा। वे निश्चित नहीं थे कि उन्हें कोन या किससे

बचाया जाएगा। वे ठीक से नहीं जानते थे कि किसे बचाया जाएगा। पौलुस ने इस रहस्य को अपने पत्रों में समझाया। परमेश्वर की योजना उन सभी लोगों को बचाना था जो यीशु पर भरोसा करते हैं। यीशु एक मानव हैं और परमेश्वर के पुत्र हैं। परमेश्वर अपने लोगों को पाप, बुराई और मृत्यु की शक्ति से बचाता है। यीशु ने क्रूस पर अपने आप को बलिदान करते समय जो किया उसके माध्यम से वह उन्हें बचाता है।

मसीह का शरीर

यीशु के अनुयायियों के समुदाय का वर्णन करने का एक तरीका। यह एक चित्र है जो बताता है कि कैसे कलीसिया में हर कोई एक-दूसरे से प्यार करता है और सेवा करता है। मसीह का शरीर कई अलग-अलग लोगों से बना है जो एक साथ लाए जाते हैं। यीशु पर विश्वास करना और उसकी आज्ञा का पालन करना ही उन्हें एक बनाता है। अपने विभिन्न वरदानों का उपयोग करते हुए, वे मिलकर पृथ्वी पर यीशु का काम जारी रखते हैं।

मसीह कि व्यवस्था

यीशु के उदाहरण का अनुसरण करने के तरीके के बारे में बात करने का एक तरीका। यीशु ने अपने चेलो को पूरे दिल, आत्मा, शक्ति और मन से परमेश्वर से प्रेम करने की आज्ञा दी। उन्होंने उन्हें अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करने की आज्ञा दी (लूका 10:27)। जब वह पृथ्वी पर रहते थे, तो यीशु ने उन्हें यह करने का तरीका दिखाया। यीशु ने अपने पिता से प्रेम किया और उनकी आज्ञा मानी। उन्होंने दूसरों की भलाई के लिए खुद को बलिदान कर दिया। उन्होंने दुनिया को बचाने के लिए अपने अधिकारों को त्याग दिया। उन्होंने दूसरों की सेवा की ताकि उन्हें दिखा सकें कि परमेश्वर उनसे कितना प्रेम करते हैं।

मसीहा

वह उद्धारकर्ता जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों को उनके सभी शत्रुओं से बचाने के लिए भेजने का वादा किया था। इब्रानी भाषा में मसीहा शब्द का अर्थ अभिषिक्त व्यक्ति या चुना हुआ व्यक्ति होता है। पुराने नियम में दर्ज कई भविष्यवाणियाँ और वादे इस उद्धारकर्ता के बारे में बात करते हैं। कई यहूदियों को यह समझ में आ गया कि ये भविष्यवाणियाँ और वादे एक राजा के बारे में बात करते हैं। वह दाऊद के परिवार से होगा। उसे हमेशा के लिए शांति लाने के लिए परमेश्वर द्वारा चुना जाएगा। जब यीशु पृथ्वी पर रहते थे, तो कई यहूदियों को विश्वास हो गया कि वह मसीहा हैं।

महसूल लेने वाला

यीशु के समय में यहूदी जिन्होंने रोमी सरकार के लिए धन एकत्र किया। बहुत से महसूल लेने वाले ईमानदार नहीं थे। उन्होंने लोगों को ज़रूरत से ज़्यादा पैसे दिलवाए। कर संग्रहकर्ता अतिरिक्त धन अपने पास रख लेते थे। अधिकांश यहूदी ऐसा करने के लिए महसूल लेने वालों से नफरत करते थे। वे रोमियों के लिए काम करने वाले कर संग्राहकों से नफरत करते थे। महसूल लेने वालों के साथ अक्सर बाहरी लोगों जैसा व्यवहार किया जाता था।। (बाहरी लोग)

महान हेरोदेस

मत्ती 2 और लूका 1 के राजा हेरोदेस। वह रोमियों द्वारा यहूदियों के राजा के उपाधि के साथ नियुक्त शासक थे। उन्होंने लगभग 36 ईसा पूर्व से 4 ईसा पूर्व तक राजा के रूप में शासन किया। उन्होंने यहूदिया और पूरे इस्राएल के क्षेत्रों पर शासन किया। वह एसाव के परिवार से थे लेकिन उन्हें यहूदी माना जाता था। उन्होंने कई निर्माण परियोजनाओं का आदेश दिया। इसमें कैसरिया शहर और यरूशलेम का मंदिर शामिल था। उन्होंने मंदिर को पहले से बड़ा और भव्य बनाने का आदेश दिया।

महायाजक

इस्राएल में सबसे अधिक अधिकार वाला धार्मिक अगुवा। महायाजक को लेवी के गोत्र का पुरुष होना चाहिए था। उसे हारून के वंशावली से होना चाहिए था। महायाजक को लोगों को वही सिखाना था जैसा मूसा ने किया था। परमेश्वर के पवित्र तम्बू और बाद में मंदिर में उसके विशेष कर्तव्य थे। केवल महायाजक को ही अति पवित्र स्थान में प्रवेश करने की अनुमति थी। उसने लोगों को बताया कि परमेश्वर उनसे क्या चाहते हैं। उसने इस्राएल के पापों की क्षमा के लिए बलिदान भी किए।

महासभा (सन्हेद्रिन)

धर्म के 70 नेताओं का एक समूह। यीशु के समय में उनके पास यहूदी अदालतों में सबसे अधिक अधिकार था। महासभा (सन्हेद्रिन) को यहूदी परिषद भी कहा जाता था। वे यरूशलेम में मंदिर की देखभाल करते थे और यहूदी लोगों के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लेते थे। फरीसी और सदूकी दोनों ही महासभा (सन्हेद्रिन) में सेवा करते थे। महासभा (सन्हेद्रिन) ने यीशु का विरोध किया। उन्होंने उन प्रेरितों का भी विरोध किया जिन्होंने यीशु के मृतकों में से उठने की खबर फैलाई।

महिमा

परमेश्वर की अद्‌भुत सुंदरता, वैभव, अच्छाई और उपस्थिति। यह इस बारे में बात करने का एक तरीका है कि परमेश्वर कौन है और वह कितना शुद्ध और पवित्र है। केवल सृष्टिकर्ता के पास यह महिमा है। वह इसे उन लोगों के साथ साझा करने का चयन करता है जिन्हें उसने बनाया है। सृजित प्राणी परमेश्वर की महिमा को तब दिखाते हैं जब वे उसकी सृष्टि के लिए उसकी योजनाओं को पूरा करते हैं।

माध्यम

कोई व्यक्ति जो संदेश प्राप्त करने के लिए मृत लोगों की आत्माओं से बात करता है। यह इस्राएलियों के आसपास के लोगों के समूहों के बीच एक आम प्रथा थी। परमेश्वर ने अपने लोगों को ऐसा करने की अनुमति नहीं दी। इसके बजाय उन्हें उससे प्रार्थना करनी थी। उन्हें परमेश्वर के वचन और परमेश्वर की आत्मा द्वारा निर्देशित किया जाना था।

मित्रता भेंट

लोग परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए बलिदान या भेंट दिया करते थे। इन भेंटों ने परमेश्वर और उनके लोगों के बीच घनिष्ठ संबंध को दर्शाया। इसलिए इन्हें मित्रता भेंट कहा जाता है। ये अक्सर किसी वादे को पूरा करने के तौर पर भी दिए जाते थे। उपहार कुछ भी हो सकता था, जो कोई देना चाहे। पवित्र तंबू और मंदिर बनाने के लिए लोगों ने जो सामग्री दी, वे मित्रता भेंट थीं। मित्रता भेंट के रूप में जानवरों की बलि दी जाती थी। आटा, तेल और दाखरस भी भेंट किये जाते थे। इस भेंट का एक हिस्सा याजक और भेंट देने वाले लोग दोनों खाते थे। वे इसे बलिदान के बाद खाते थे। मित्रता भेंट के दौरान तुरहियां बजाई जाती थीं।

मिद्यानियों

मिद्यान अब्राहम और उसकी पत्नी कतूरा का पुत्र था। मिद्यानियों नामक लोगों का समूह उसके परिवार से आया था। जिस भूमि पर वे रहते थे उसका नाम भी मिद्यान कहलाता था। यह मिस्र के पूर्व और कनान के दक्षिण में था। परमेश्वर ने मिद्यान देश में मूसा को दर्शन दिए। पुराने नियम में, मिद्यानियों ने कभी-कभी इस्राएलियों की मदद की थी। अन्य समय में उन्होंने उन्हें नुकसान पहुँचाया।

मिलाप का तम्बू

सीनै पर्वत के निकट इस्राएली छावनी के बाहर एक तम्बू। परमेश्वर ने वहां बादल के खम्भे के द्वारा मूसा और इस्राएलियों से मुलाकात की। कुछ स्त्रियाँ प्रवेश द्वार पर सेवा करती थीं और यहोशू हर समय तंबू में रहता था। पवित्र तम्बू के निर्माण के बाद मिलन तम्बू का उपयोग नहीं किया जाता था। परन्तु पवित्र तम्बू को मिलापवाला तम्बू भी कहा जाता था।

मिस्र

उत्तरी अफ्रीका का एक शक्तिशाली राज्य। इस्राएली वहाँ कई वर्षों तक गुलाम थे। वे मिस्र में दासता से निर्गमन में मुक्त हुए। मिस्र के राजाओं को फिरौन कहा जाता था। बाइबिल में, मिस्रियों ने कभी-कभी परमेश्वर के लोगों को नुकसान पहुँचाया और अन्य समय में उनकी मदद की।

मीका

योताम, आहाज और हिजकिय्याह के समय में दक्षिणी राज्य का एक नबी। उसके संदेश उत्तरी राज्य और दक्षिणी राज्य के लिए थे। उसकी भविष्यवाणियाँ मीका की पुस्तक में दर्ज हैं।

मीकाएल

परमेश्वर की सेवा करने वाले स्वर्गदूतों में से एक प्रधान। परमेश्वर ने उसे स्वर्गीय दुनिया में अधिकार दिया। दानिय्येल अध्याय 10 और 12 में मीकाएल को इस्राएल के लोगों की सेवा और रक्षा करते हुए वर्णित किया गया है। प्रकाशितवाक्य में, यूहन्ना ने एक युद्ध का वर्णन किया जिसमें मीकाएल ने अजगर के खिलाफ लड़ाई लड़ी। यहूदा ने अपने समय के एक यहूदी लेखन पर आधारित मीकाएल की एक कहानी बताई।

मुहर

बाइबिल में मुहर शब्द के कई अर्थ हैं। पहला अर्थ है किसी चीज़ को बंद करना या ढकना। दूसरा है किसी समझौते या वाचा को प्रभावी बनाना। तीसरा अर्थ है चिपचिपा मोम का टुकड़ा। लोग महत्वपूर्ण चर्मपत्र या कागजों को बंद करने के लिए मोम लगाते थे। केवल अनुमति वाले लोगों को मुहर तोड़ने और कागज खोलने की अनुमति थी। अंतिम अर्थ है एक आधिकारिक या शाही चिह्न जो दर्शाता है कि कोई व्यक्ति कौन है। कागजों या अन्य चीजों पर दबाई गई सील उन पर

अपनी छाप छोड़ देती थी। इससे पता चलता था कि व्यक्ति किसी चीज़ से सहमत है या वह चीज़ उनकी है।

मूसा

एक इस्राएली दास जो मिस्र के शाही महल में पला-बढ़ा था। वह अम्राम और योकेबेद का पुत्र और लेवी के गोत्र से था। हारून उसका भाई था और मरियम उसकी बहन थी। उसकी पत्नी सिप्पोरा थी और उसके पुत्र गेर्शोम और एलीएजेर थे। इब्रानी भाषा में मूसा का मतलब निकाला हुआ होता है। फिरौन की बेटी ने उसे नील नदी से बाहर निकाला और उसका पालन-पोषण किया। परमेश्वर ने रेगिस्तान में मूसा को दर्शन दिये। परमेश्वर ने उससे इस्राएलियों को गुलामी से बाहर निकालने के लिए कहा। मूसा उन्हें मिस्र से बाहर, रेगिस्तान से होते हुए उनकी नई भूमि तक ले गया। मूसा ने उनके साथ कनान में प्रवेश नहीं किया। परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिए कि इस्राएलियों को कैसे रहना चाहिए। इन निर्देशों को मूसा का व्यवस्था कहा जाता है (मूसा की व्यवस्था)। मूसा का परमेश्वर के साथ बहुत घनिष्ठ संबंध था। जब उनकी मृत्यु हुई, तो परमेश्वर ने उनके शरीर को दफना दिया और किसी को उनकी कब्र नहीं मिली।

मूसा का कानून

मूसा की व्यवस्था के दो अर्थ हैं। पहला अर्थ है कि इस्राएलियों को अपने जीवन जीने के तरीके के बारे में परमेश्वर के निर्देश। इसे भी व्यवस्था कहा जाता है। इसमें दस आज्ञाएँ शामिल हैं। परमेश्वर ने ये निर्देश मूसा के माध्यम से दिए। कुछ व्यवस्था परमेश्वर की उचित तरीकों से उपासना करने के बारे में थीं। अन्य व्यवस्था इस बारे में थीं कि इस्राएलियों एक-दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करें। दूसरों ने इस बात पर चर्चा की कि इस्राएलियों को समुदायों में और एक राष्ट्र के रूप में एक साथ कैसे रहना है। मूसा की व्यवस्था का दूसरा अर्थ पुराना नियम की पहली पाँच पुस्तकें हैं। वहीं सभी व्यवस्था दर्ज हैं। इन पुस्तकों को तोराह और पेंटाट्यूक भी कहा जाता है। इब्रानी भाषा में तोराह का अर्थ व्यवस्था है। यूनानी भाषा में पेंटाट्यूक का अर्थ है पाँच पवित्रशास्त्र। (दस आज्ञाएँ, यहूदी व्यवस्था)

मृत्यु और नरक

प्रकाशितवाक्य में, यूहन्ना ने मृत्यु और नरक को बुरी शक्तियों के रूप में वर्णित किया है जिनका न्याय परमेश्वर ने किया था। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने मृत्यु और नरक को सदा के लिए रोक दिया। इस वजह से, पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य में लोग कभी नहीं मरेंगे। और जो लोग परमेश्वर के राज्य में शामिल होने से इनकार करते हैं, वे हमेशा के लिए परमेश्वर से अलग हो जाएंगे।

मेसोपोटामिया

दज़ला नदी और फरात नदी के आसपास का क्षेत्र। यह वह जगह थी जहां अब ईरान, सीरिया, कुवैत और तुर्की नामक देशों के हिस्से हैं।

मैं हूँ

वह नाम जो परमेश्वर ने खुद को मूसा के सामने निर्गमन 3:14 में वर्णित करने के लिए उपयोग किया। यह नाम इब्रानी अक्षरों वाई.एच.डब्लू.एच से बना है। कोई नहीं जानता कि इस नाम का सही अर्थ क्या है। वाई.एच.डब्लू.एच अक्षर इब्रानी शब्दों की तरह लगते हैं जिसका अर्थ है मैं जो हूँ सो हूँ। परमेश्वर वही हैं जो वह हैं और वही चुनते हैं कि वह क्या करेंगे। कोई भी और कुछ भी परमेश्वर को कुछ करने या होने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। यीशु ने यूहन्ना की पुस्तक में खुद को वर्णित करने के लिए इन्हीं शब्दों का उपयोग किया है।

मैं हूँ कथन

एक तरीका जिससे यीशु ने लोगों को बताया कि वह कौन हैं। युहन्ना के सुसमाचार में यीशु ने सात बार विशेष तरीके से "मैं हूँ" शब्दों का उपयोग किया।इन शब्दों के साथ उन्होंने अपना और पृथ्वी पर अपने द्वारा किये जा रहे कार्यों का वर्णन किया। जब परमेश्वर ने मूसा को अपना नाम बताया, तब उन्होंने निर्गमन 3:14 में "मैं हूँ" शब्दों का उपयोग किया।

मोआब

एक जन समूह जो यरदन नदी के पूर्व में रहते थे। वे लूत के वंश से थे। जिस भूमि पर वे रहते थे उसे मोआब भी कहा जाता था। वे बाल और कमोश नामक झूठे देवताओं की उपासना करते थे। कभी-कभी मोआबियों ने परमेश्वर के लोगों को नुकसान पहुँचाया और कभी-कभी उनकी मदद की।

मोरिय्याह पर्वत

यरूशलेम में एक चट्टानी पहाड़ी की चोटी। इसे सिय्योन पहाड़ी भी कहा जाता था। यह यरूशलेम के उस हिस्से के उत्तर में था जिसे दाऊद ने अपनी सरकार के लिए इस्तेमाल किया था। इब्रानी भाषा में मोरिया का अर्थ है वह स्थान जहां प्रभु प्रदान करते हैं और प्रकट होते हैं। यहीं पर परमेश्वर ने

मोर्दकै

अब्राहम से इसहाक का बलिदान करने के लिए कहकर उसकी परीक्षा ली। तब परमेश्वर ने इसहाक के स्थान पर बलि चढ़ाने के लिये मेढ़ा प्रदान किया। कई वर्षों के बाद प्रभु का दूत मोरिया पर्वत पर प्रकट हुआ। स्वर्गदूत यरूशलेम को नष्ट करने के लिए एक महामारी लाया। दाऊद द्वारा बनाई गई वेदी पर परमेश्वर ने भेंट स्वीकार की। दाऊद ने उस वेदी को मोरिया पर्वत पर यबूसी के खलिहान पर बनाया। तब परमेश्वर ने महामारी को रोक दिया। इसीलिए सुलैमान ने पहला मंदिर मोरिया पर्वत पर बनवाया था। दूसरा मंदिर भी वहीं बनाया गया।

मोर्दकै

एक यहूदी जो क्षयर्ष के समय में फारस साम्राज्य में रहता था। मोर्दकै याईर का पुत्र था और बिन्यामीन के गोत्र से था। उसने अपनी चचेरी बहन एस्तेर को गोद लिया जब उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई। उसने शूशन के महल के द्वार पर फारस सरकार में सेवा की। हामान के मारे जाने के बाद, मोर्दकै क्षयर्ष का सलाहकार बन गया। मोर्दकै फारस साम्राज्य में एक महत्वपूर्ण सरदार था जिसके पास अधिकार था।